

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the '*Committee on Publication Ethics*'

Online ISSN:2584-184X



Research Article

मिड-डे-मिल योजना शिक्षा सुधार और मानव विकास का एक प्रभावी साधन

भरत कुमार जांगिड़ ^{1*}, डॉ. श्रीमती समीना ²

¹ शोधार्थी (शिक्षा), मौलाना आजाद विश्वविद्यालय जोधपुर, बुझावड़, जोधपुर, राजस्थान, भारत

² शोध पर्यवेक्षिका, निर्देशिका एवं विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय), मौलाना आजाद विश्वविद्यालय जोधपुर, बुझावड़, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * भरत कुमार जांगिड़

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19666600>

सारांश

संविधान के अनुच्छेद 46 में प्रावधान है कि राज्य समाज के कमजोर वर्गों और विशेष रूप से अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों को विशेष देखभाल के साथ बढ़ावा देना और उन्हें सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के शोषण से बचाएगा। इसी बात को दृष्टिगोचर रखते हुए। सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत मिड डे मिल मिल योजना भारत सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पोषण सहायता कार्यक्रम 15 अगस्त, 1995 को शुरू की गई। जिसका उद्देश्य नामांकन, उपस्थिति और ठहराव में सुधार के साथ-साथ बच्चों में पोषण स्तर को बढ़ाना था। 2001 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार इस योजना के तहत कक्षा 1 से 5 तक पढ़ने वाले सभी बच्चों को 300 कैलोरी और 8-12 ग्राम प्रोटीन युक्त पका हुआ मध्याह्न भोजन उपलब्ध कराया जा सके। 2008-2009 में इस योजना को कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों को शामिल किया गया। सितम्बर 2021 में, सरकार ने केन्द्र प्रायोजित प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण (पीएम पोषण) योजना को वित्त वर्ष 2022 से वित्त वर्ष 2026 तक सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों, विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों (एसटीसी) मदरसों और सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत आने वाले मकतबों में दिन में एक बार पका हुआ गर्म खाना उपलब्ध करवाया जाता है।

मिड डे मिल योजना शिक्षा में सुधार लाने का एक उचित माध्यम है। इस योजना के माध्यम से बच्चों की उपस्थिति दर में वृद्धि, स्वास्थ्य में सुधार, गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों के शिक्षा के स्तर में सुधार, सामाजिक समावेशन, शिक्षकों की उपस्थिति में वृद्धि और शिक्षा के प्रति अभिभावकों की रुचि में वृद्धि से बच्चों की शिक्षा में सुधार होता देखने को मिला है।

सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत संचालित मिड-डे मिल योजना मानव विकास का एक उपयोगी साधन के रूप में बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक समावेशन और मानव विकास के सूचकांक में सुधार को भी इंगित करती है। परिणाम स्वरूप शिक्षा दर, स्वास्थ्य दर एवं जीवन प्रत्याशा दर में सुधार देखने को मिला है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2584-184X
- Received: 01-03-2026
- Accepted: 16-04-2026
- Published: 20-04-2026
- MRR:4(SP1); 2026: 110-114
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

भरत कुमार जांगिड़, डॉ. श्रीमती. समीना.
मिड-डे-मिल योजना शिक्षा सुधार और
मानव विकास का एक प्रभावी साधन.
Indian J Mod Res Rev. 2026;4(SP1):
110-114.

Access this Article Online



www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: मिड-डे मिल, राष्ट्रीय पोषण सहायता, कार्यक्रम, शिक्षा सुधार एवं मानव विकास।

प्रस्तावना

मिड-डे-मिल योजना का उद्देश्य बच्चों को दिन में एक बार गर्म एवं ताजा मुफ्त भोजन करना है जिससे वह एकाग्रचित होकर शिक्षण कर सकें। इससे उसकी शिक्षा में सुधार हो सके। क्योंकि शिक्षा मनुष्य के विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। ये व्यक्ति के विकास में सहायता करती है। शिक्षित व्यक्ति परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और मूल्य प्रदान किए जाते हैं, जो उन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता प्राप्त करने में मदद करते हैं।

शिक्षा में सुधार आवश्यक है। शिक्षा में समय-समय पर समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सुधार करना समय की मांग है और उसमें आई कमियों को दूर करना समाज और अर्थ व्यवस्था के लिए आवश्यक है। शिक्षा सुधार के माध्यम से हम अधिक गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी समाज एवं राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। इसके लिए व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास के लिए अधिक प्रभावी कार्य योजना की आवश्यकता होती है। मिड-डे-मिल योजना के माध्यम से सरकार बच्चों की शिक्षा व स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर समय-समय पर इसमें बच्चों के लिए बनने वाले भोजन के मेन्यू में सुधार करती है। पीएम पोषण योजना नाम परिवर्तन भी सुधार का एक भाग है।

शिक्षा का मानव विकास पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि ये दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहता है और समाज में सकारात्मक योगदान देता है। सामाजिक समावेशन को बढ़ावा मिलता है। समरूप समाज की स्थापना के अवसर बढ़ते हैं। समाज में जातिगत, सामाजिक एवं आर्थिक भेदभाव कम होने के अवसरों को बढ़ावा मिलता है। परिणाम स्वरूप वे अपना शिक्षा जारी रख सकते हैं। उनका भविष्य बेहतर बन सकता है। मानव विकास से शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन प्रत्याशा दर में सुधार देखने को मिलता है।

मिड-डे-मिल योजना के उद्देश्य

- शिक्षा के स्तर में सुधार लाना
- विद्यालयों में विद्यार्थियों की उपस्थिति दर बढ़ाना।
- स्कूली बच्चों को एक समय का मुफ्त भोजन प्रदान करना।
- बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार लाना।

मिड-डे-मिल योजना के प्रभाव

- मिड-डे-मिल योजना के प्रभाव से गरीब, वंचित एवं पिछड़े वर्ग के बच्चों की शिक्षा के स्तर में सुधार देखने को मिला है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में इस वर्ग के बच्चों में शिक्षा को लेकर अब रूचि उत्पन्न हुई है।
- यह योजना बच्चों के स्वास्थ्य के स्तर को बढ़ाने में वरदान साबित हुई। बच्चों में कुपोषण, एनीमिया जैसी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का काफी हद तक समाधान देखने को मिला है।
- इस योजना के परिणामस्वरूप विद्यालयों में गरीब एवं वंचित वर्ग के बच्चों की उपस्थिति दर में सुधार देखने को मिला है। अब बच्चे विद्यालय में नियमित अध्ययन के लिए जाते हैं।

- गरीब एवं वंचित वर्ग के बच्चों को इस योजना के द्वारा मुफ्त भोजन मिलने से उनकी शिक्षा एवं भविष्य को बेहतर बनाने से लाभ प्राप्त होने की सम्भावना को बल मिला है।

शिक्षा सुधार और मानव विकास:-

शिक्षा सुधार: यह न केवल मनुष्य के सर्वांगीण विकास में योगदान देती है, बल्कि उन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। जिसमें उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण शामिल है। मिड-डे-मिल योजना शिक्षा में सुधार लाने के लिए विभिन्न तरीकों से कार्य करती है:-

1. **उपस्थिति दर में वृद्धि:** इस योजना के परिणाम स्वरूप बच्चों को निःशुल्क भोजन मिलने से उनकी शिक्षा में निरन्तरता आने से उनकी शिक्षा दर में सुधार देखने को मिला है। उपस्थिति दर में वृद्धि के फलस्वरूप अपने अध्ययन पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं।
2. **स्वास्थ्य दर में सुधार:** मिड-डे-मिल योजना के माध्यम से बच्चों को गर्म एवं पौष्टिकता युक्त भोजन मिलता है, जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार होता है। स्वस्थ बच्चे पढ़ाई एवं अपने अन्य दैनिक कार्यों में अधिक ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं और उत्साहपूर्वक जीवन यापन कर सकते हैं। जिससे उनकी शिक्षा में सुधार होता है।
3. **गरीब, पिछड़े एवं वंचित वर्ग के बच्चों को लाभ:** मिड डे-मिल योजना इस वर्गों के बच्चों को निःशुल्क भोजन प्रदान करती है, जिससे इस वर्ग के बच्चे अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं। इससे उनकी शिक्षा में सुधार होता है और वे अपने भविष्य को बेहतर बना सकते हैं।
4. **शिक्षा के स्तर में सुधार:** मिड-डे-मिल योजना के कारण शिक्षा के स्तर में अन्य बच्चों के साथ ही साथ गरीब व वंचित के बच्चों को नियमित पौष्टिक भोजन, मिलने के परिणाम स्वरूप अध्ययन में, ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं, जिससे उनकी शिक्षा के स्तर में भी सुधार हुआ है।
5. **सामाजिक समावेशन:** मिड-डे-मिल योजना से सामाजिक समावेशन को भी बढ़ावा मिला है, क्योंकि सभी बच्चों को एक साथ बैठकर भाजन करवाया जाता है। उससे जाति, धर्म और आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव दूर करने को बल मिला है और सभी बच्चे एक साथ शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इससे समाज एवं राष्ट्र में जाति, धर्म एवं आर्थिक स्तर पर समरसता का विकास हो पाता है।
6. **शिक्षकों की उपस्थिति में वृद्धि:** मिड-डे-मिल योजना के कारण शिक्षकों की उपस्थिति में भी वृद्धि देखने को मिली है, क्योंकि उन्हें भी भोजन मिलता है। बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों को भी भोजन करने से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है और वे बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करते हैं। विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों की उपस्थिति में वृद्धि से सामाजिक समावेशन एवं शिक्षा के स्तर में सुधार देखने को मिलता है।
7. **शिक्षा के प्रति अभिभावकों की रूचि में वृद्धि:** मिड-डे-मिल योजना के कारण अभिभावकों की शिक्षा को लेकर सोच में भी बदलाव देखने को मिला है उनकी भी रूचि शिक्षा में बढ़ सकती

है, क्योंकि उनके बच्चों को मुफ्त भोजन मिलता है। इससे वे अपने बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं और अभिभावकों की शिक्षा में रूचि से बालकों की शिक्षा में सुधार होता है। ये सुधार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में इस वर्गों के बच्चों में समान रूप से देखने को मिलता है।

मानव विकास का प्रभावी साधन:-

मिड-डे-मिल योजना मानव विकास का एक प्रभावी साधन है, क्योंकि यह योजना बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक समावेशन में सुधार करने में मदद करती है।

1. **स्वास्थ्य में सुधार:** मिड-डे-मिल योजना के माध्यम से बच्चों को पौष्टिक भोजन मिलता है। जिससे उनका स्वास्थ्य सुधरता है। स्वस्थ बच्चे शिक्षा पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं और उत्साही जीवन व्यतीत करते हैं, जिससे उनकी शिक्षा में सुधार होता है।
2. **शिक्षा में सुधार:** मिड-डे-मिल योजना के कारण बच्चों की उपस्थिति दर वृद्धि, ड्रॉप आउट दर में कमी से बच्चों की शिक्षा में नियमितता देखने को मिलती है। मुफ्त भोजन मिलने से वे अपने अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं, जिससे उनकी शिक्षा में सुधार हुआ है।
3. **गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों को लाभ:** मिड-डे-मिल योजना गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों को मुफ्त भोजन प्रदान करती है, जिससे वे अपनी शिक्षा को जारी रख पाते हैं। इससे उनकी शिक्षा में सुधार होता है और वे अपने भविष्य को बेहतर बना सकते हैं।
4. **मानव विकास के सूचकांकों में सुधार:** मिड-डे-मिल योजना के परिणाम स्वरूप मानव विकास सूचकांकों में सुधार होता है, जैसे कि शिक्षा दर, स्वास्थ्य दर, और जीवन प्रत्याशा दर। इससे देश के मानव विकास में सुधार होता है और देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार होता है।

समाधान-

- **इंटर-डिपार्टमेंटल समन्वय (लद्दाख मॉडल):** यह एक ऐसा मॉडल है जिसमें विभिन्न विभागों के बीच समन्वय स्थापित करके मिड-डे-मिल योजना को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है। इस मॉडल में शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग और अन्य संबंधित विभागों के बीच समन्वय स्थापित किया जाता है ताकि बच्चों को पौष्टिक भोजन प्रदान किया जा सके और उनकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य में सुधार हो सके।
- **लद्दाख मॉडल के अलावा गुजरात:** कर्नाटक मॉडल, तमिलनाडु मॉडल, पंजाब मॉडल, पीलीभीत मॉडल और कानपुर मॉडल प्रमुख हैं। जिनमें बच्चों को पौष्टिक नाश्ता, जिसके अन्तर्गत फल, अंकुरित दालें, खिचड़ी, किचन गार्डन के अन्तर्गत पौष्टिक सब्जियाँ उगाना तथा महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने जैसे कदम उठाए गए हैं।
- **शिक्षा विभाग:** शिक्षा विभाग मिड-डे-मिल योजना के लिए जिम्मेदार है और यह सुनिश्चित करता है कि बच्चों को पौष्टिक भोजन प्रदान किया जाय।

- **स्वास्थ्य विभाग:** स्वास्थ्य विभाग मिड-डे-मिल योजना के लिए स्वास्थ्य संबंधी पहलुओं का ध्यान रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि भोजन स्वच्छ, पौष्टिक एवं गुणवत्तापूर्ण हो।
- **ग्राम पंचायत:** ग्राम पंचायत मिड-डे-मिल योजना के लिए स्थानीय स्तर पर समन्वय स्थापित करने का कार्य करती है और यह सुनिश्चित करती है कि योजना को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।
- **विद्यालय प्रबंधन समिति:** विद्यालय प्रबंधन समिति मिड-डे-मिल योजना के लिए जिम्मेदार है और यह सुनिश्चित करती है कि बच्चों को पौष्टिक भोजन प्रदान किया जाए।
- **स्थानीय खरीद से भोजन की लागत में कटौती सम्भव:** मिड-डे-मिल में बनने वाले भोजन की खरीद एवं परिवहन के खर्च को कम करने और निर्धारित बजट में बनाने का समाधान करने के लिए भोजन सामग्री को स्थानीय स्तर पर खरीद कर इस समस्या का समाधान संभव है, जिससे इसकी लागत को कम किया जा सकता है और परिवहन के खर्च को भी कम किया जा सकता है।
- **सामुदायिक भागीदारी (तिथि भोजन):** मिड-डे-मिल योजना का यह एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसमें समुदाय के सदस्य स्कूलों में बच्चों को भोजन करने में भाग लेते हैं। इस पहलू में समुदाय के सदस्य अपने स्वयं के संसाधनों का उपयोग करके बच्चों को भोजन प्रदान करते हैं, जिससे मिड-डे-मिल योजना को अधिक प्रभावी और टिकाऊ बनाया जा सकता है। अलग-अलग स्वयंसेवी से संस्थाओं से भोजन की उपलब्धता बढ़ाना। तिथि भोजन के कुछ प्रमुख पहलू हैं:-
- **समुदाय की भागीदारी:** समुदाय के सदस्य अपने स्वयं के संसाधनों का उपयोग करके बच्चों को भोजन प्रदान करते हैं।
- **स्थानीय संसाधनों का उपयोग:** समुदाय के सदस्य स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके भोजन तैयार करते हैं, जिससे योजना को अधिक टिकाऊ एवं न्यूनतम लागत पर बनाया जा सकता है।
- **शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार:** तिथि भोजन के माध्यम से बच्चों को पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक भोजन प्रदान किया जाता है, जिससे उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।
- **समुदाय की जिम्मेदारी:** समुदायके सदस्य अपने बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार होते हैं जिससे योजना को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

तिथि भोजन के कई लाभ हैं जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:-

- **पौष्टिकता:** तिथि भोजन में पौष्टिक तत्व जैसे कि प्रोटीन, विटामिन, मिनरल्स और फाइबर होते हैं जो शरीर के लिए आवश्यक होते हैं।
- **स्वास्थ्यवर्धक:** तिथि भोजन स्वास्थ्यवर्धक होता है क्योंकि इसमें कम वसा और अधिक फाइबर होता है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है।
- **वजन कम करने में मदद:** तिथि भोजन वजन कम करने में मदद करता है, क्योंकि इस प्रकार के भोजन में कैलोरी की कम मात्रा पाई जाती है और अधिक फाइबर युक्त भोजन मिलता है, जो भूख को नियंत्रित करता है।

- **रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है:** तिथि भोजन में एंटीऑक्सीडेंट और अन्य पोषक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में उपयोगी है।
- **मस्तिष्क के लिए लाभदायक:** तिथि भोजन में आमेगा - 3 फैटी एसिड होता है जो मस्तिष्क के विकास के लिए बेहद लाभदायक होता है और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक होता है।
- **तनाव को कम करता:** तिथि भोजन में ट्रिप्टोफान होता है, जो तनाव को कम करने में मदद करता है।
- **पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है:** तिथि भोजन में फाइबर होता है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है और कब्ज को रोकता है।
- **त्वचा और बालों के लिए लाभदायक:** तिथि भोजन में विटामिन ई होता है, जो त्वचा और बालों के लिए लाभदायक होता है।
- **ऊर्जा बढ़ाता है:** तिथि भोजन में कार्बोहाइड्रेट होता है जो शारीरिक क्षमता और शारीरिक ऊर्जा को बढ़ाता है और बच्चों की कार्य क्षमता को बढ़ाता है।
- **सस्ता और आसानी से उपलब्ध:** तिथि भोजन सस्ता तथा आसानी से उपलब्ध होता है, जो इसे एक अच्छा विकल्प बनाता है।

मिड-डे-मिल योजना चुनौतियाँ: हालांकि इस योजना में कई चुनौतियाँ भी देखने को मिली हैं, जिसमें प्रमुख है, ये हैं -

- **एक-शिक्षक स्कूल:** सरकारी एवं सहायता प्राप्त प्राथमिक स्कूलों में बजट की कमी को देखते हुए खाना बनाने और व्यवस्था बनाए रखने के लिए रसोइया की कमी महसूस की गई है। 25% प्राथमिक स्कूलों में जहाँ शिक्षक ही रसोइया बनते हैं। शिक्षक ही इस दायित्व को निभाते हैं, जिससे शिक्षण कार्य बाधित होता है। यह एक चुनौतिपूर्ण कार्य है कि भोजन बनाने और शिक्षण कार्य साथ-साथ करवाना मुश्किल कार्य है।
- **अपर्याप्त बजट:** मिड-डे-मिल कार्य के अन्तर्गत सरकार द्वारा जारी प्रत्येक बच्चे के लिए राशि 6.78% गुणवत्ता पूर्ण भोजन उपलब्ध करवाना मुश्किल कार्य है। भोजन की गुणवत्ता की कमी से बच्चों के स्वास्थ्य कमी रहने की संभावना बनी रहती है। पोषण की कमी बनी रहती है।
- **भण्डारण की समस्या:** मिड-डे-मिल सबसे बड़ी चुनौती इसके भण्डारण को लेकर है। यदाकदा देखने व सुनने को मिलता है कि फला फल स्कूल व जिलों में मिड-डे-मिल के भोजन में सब्जी में छिपकली मिली। भोजन को चूहों ने खराब कर दिया। भण्डारण के अभाव में भोजन की गुणवत्ता व स्वच्छता को बनाये रखना एक बड़ी समस्या है।

- **पानी की कमी:** पानी उपलब्धता बनाए रखना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। ग्रामीण क्षेत्र और दूर-दराज क्षेत्रों को मिलाकर 30% स्कूलों में स्वच्छ पानी की कमी पाई गई।

निष्कर्ष

मिड-डे-मिल योजना शिक्षा सुधार और मानव विकास का एक प्रभावी साधन है। शिक्षा सुधार और मानव विकास एक दूसरे से जुड़े हैं। शिक्षा सुधार के माध्यम से हम मानव विकास में सुधार कर सकते हैं, और मानव विकास के माध्यम से हम शिक्षा सुधार के महत्व को समझ सकते हैं। इसलिए, हमें शिक्षा सुधार के महत्व को समझ सकते हैं। इसलिए, हमें शिक्षा सुधार के लिए अधिक ध्यान देना होगा, और शिक्षा को व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास और समाज के विकास के मिड-डे-मिल योजना एक प्रभावी साधन बन कर उभरी है। इस योजना के तहत स्कूलों से बच्चों की उपस्थिति दर में वृद्धि हुई है, जिससे शिक्षा दर में सुधार हुआ है। इस योजना के तहत लगभग 11.80 करोड़ बच्चे लाभांशित हो रहे हैं। स्वास्थ्य दर में सुधार से स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति दर में वृद्धि हुई है, इस योजना के माध्यम से बच्चों को 450-700 कैलोरी और 12-20 ग्राम प्रोटीन वाला भोजन प्रदान किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. Sources :- test book .com, digital /nb.in/mid-day
2. www.digitalnb.in
3. mid-day meal scheme 2025 : pmposhan
4. metaAI with Lima4
5. hindiarise.com
6. rajteachers.in/midda
7. मिड-डे-मिल के साथ बच्चों को नाश्ता देने की तैयारी, गुजरात
8. www.updatemarts.com
9. अब कम जगह वाले स्कूलों में गमलों में उगाई जाएगी पौष्टिक
10. www.livehindustan.com
11. Kanpur news :- सीएम योगी के मार्गदर्शन में 9-12 की कक्षा के लिए योजना
12. newstrack.com
13. Kanpur News :- कानपुर डीएम ने धोए मिड-डे-मिल योजना पर निर्देश दिये
14. www.tv9hindi.com
15. Testbook. (2024). Mid-day meal scheme in India.
16. https://www.testbook.com
17. Digital NB. (2024). Mid-day meal scheme and recent updates.
18. https://www.digitalnb.in
19. Ministry of Education, Government of India. (2025). PM-POSHAN (Mid-Day Meal) Scheme.

20. <https://www.education.gov.in>
21. India Rise. (2024). Mid-day meal scheme: objectives and implementation.
22. <https://www.hindiarise.com>
23. Raj Teachers. (2024). Mid-day meal scheme related information.
24. <https://www.rajteachers.in>

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

Disclaimer: The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.